an>

Title: Need to enhance the agricultural productivity in the country with the use of new high quality seeds.

श्री लल्लू सिंह (फ़ैजाबाद) ः भारत विश्व की तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्था होने के बावजूद यहाँ का किसान खेती के अलाभकारी होने के कारण आत्महत्या करने के लिए विवश हो रहा है। सरकारी स्तर पर किसानों को कर्ज उपलब्ध कराने की विशेष सुविधाएँ देते हुए गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष किसानों को एक लाख करोड़ रूपये का कर्ज देने की व्यवस्था की गयी है, किंतु फिर भी अभी 40 प्रतिशत से अधिक किसान परिवार निजी क्षेत्र लोन व्यवस्था पर निर्भर है। 2016-17 में 272 मिलियन टन अनाज पैदा होने का अंदाजा है जो पिछले अनेक वर्षों की तुलना में सर्वाधिक है। विशेषज्ञों का मत है कि खाद्यान्न का अधिक उत्पादन देश की खाद्य समस्या निपटाने के लिए एक सीमा तक सहायक हो सकता है किंतु किसान की व्यक्तिगत आर्थिक समस्या निपटाने में समर्थ नहीं है।

मेरा सुझाव है कि किसान की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए खेती की उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता है। 2015-16 में इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च द्वारा 310 नये खाद्यान्नों के बीज बोये गये हैं जिनमें 155 गेहूँ, चावल आदि के, 50 तिलहन के, 43 दलहन के शेष अन्य खाद्यान्नों के हैं।

मेरा सरकार से आग्रह है कि इन नये शोधित बीजों को किसानों द्वारा खेती में उपयोग कराने की व्यवस्था करें ताकि किसानों की उत्पादकता बढ़े और उनकी आय में बढ़ोतरी हो।